अध्याय–13
नस्लें (Breeds)

13.1 गाय की नस्लें (Breeds of Cow) :

पशुपालन कृषि व्यवसाय के साथ जुड़ा हुआ मुख्य व्यवसाय है। हमारे यहाँ प्राचीनकाल से पशुधन को विशेष महत्व दिया जा रहा है। गाय एक महत्वपूर्ण जानवर है जो संसार में प्रायः सर्वत्र पायी जाती है। भारतीय गाय से उत्तम किस्म का दूध प्राप्त होता है। इसलिए हिन्दू गाय को माता (गौमाता) मानते हैं। इसके बछड़े बड़े होकर गाड़ी खींचते हैं व खेतों की जुताई करते हैं। राष्ट्रीय पशु अनुवांशिक संसाधन ब्यूरो, करनाल (हरियाणा) के अनुसार भारतीय गायों की 40 नस्लें पायी जाती है जिन्हें उपयोगिता के आधार पर तीन वर्गो में बांटा गया है।

1. दुधारू नस्ले (Milch Breeds) : साहीवाल, सिन्धी, गिर, राठी, देवनी।
2. द्विकाजी नस्लें (Dual Breeds) : थारपारकर, कांकरेज, हरियाणा, अंगोल, डांगी, पंगानूर, देवली, मेवाती, गाबलाब, सीरी, राठी, कृष्णाघाटी, निमाड़ी।
3. भारवाही नस्लें (Draft Breeds) : नागौरी, मालवी, कंगायम, अमृत महल, खिल्लारी हल्लीकर, बच्चौर, खेरीगढ, पंवार, बरगुर, कैनकथा, गंगातीरी।

उपरोक्त नस्लों के अतिरिक्त केरल प्रदेश में कम ऊंचाई एवं छोटे आकार की वैचूर नस्ल की गाय पायी जाती है जिसे मिनिएचर गाय कहते है। भारतीय नस्लों के अलावा विदेशी गायों की नस्लें निम्नलिखित है।

1.	ब्राउनस्वीस	–	स्वीटजरलैण्ड
2.	जर्सी	–	जर्सीद्वीप
3.	आयरशायर	–	स्कॉटलैण्ड
4.	गर्नशी	–	गर्नसी द्वीप
5.	शार्ट होर्न	–	इग्लैंड
6.	रेडडेन	–	डेनमार्क
7.	होलस्टीन फ्रीजियन	–	हॉलैण्ड

इनके अतिरिक्त भारत के राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान करनाल में संकर प्रजनन द्वारा गायों की कुछ संकर नस्लें तैयार की है, जैसे –

1.करनफ्रिज
2.करनस्वीस

1. गिर

1. उत्पत्ति स्थान एवं वितरण (Origin and distribution)– इस नस्ल का मूल स्थान काठियावाड वन क्षेत्र है यह नस्ल जूनागढ़, भावनगर एवं अमरेली जिलों में पाई जाती है, गिर नस्ल राजस्थान के अजमेर व भीलवाड़ा जिलों में पाई जाती है।

2. विशेषताएं (Characteristics)– इस नस्ल के पशुओं का रंग लाल, सफेद जिस पर काले कत्थई व सफेद धब्बे होते हैं, शरीर सुडोल, भारी, कान लम्बे, लटकते हुए, माथा चौड़ा व उभरा हुआ सींग लम्बे व मोटे–मोटे, गर्दन लम्बी व पतली तथा अयन पीछे तक फैला हुआ होता है। गिर गाय का भार 380 से 450 कि.ग्रा तथा नर का भार 550 से 650 कि.ग्रा होता है।

गिर

3. उपयोगिता (Utility)– गिर नस्ल की गाय का दूध उत्पादन 1500–1800 लीटर प्रति ब्यांत होता है जिसमें औसत वसा 4.5 प्रतिशत होती है।

2. थारपारकर

1. उत्पत्ति स्थान एवं वितरण (Origin and distribution) – इस नस्ल का मूल स्थान पाकिस्तान में सिंध प्रदेश का थारपारकर क्षेत्र है यह नस्ल गुजरात के कच्छ के रन क्षेत्र में पाई जाती है, थारपारकर नस्ल राजस्थान के जैसलमेर, बाड़मेर व जोधपुर जिलों में पाई जाती है।

थारपारकर

2. विशेषताएं (Characteristics)– इस नस्ल के पशुओं का रंग सफेद या धूसर (हल्का भूरा) होता है शरीर मध्यम, सुगठित, ललाट चौड़ा, कान लम्बे, नथूने चौडे, सींग मध्यम, गर्दन पतली लम्बी, कूबड उठा हुआ तथा अयन

पूर्ण विकसित होता है, थारपारकर गाय का भार 380 से 400 कि.ग्रा. व नर का भार 450 से 500 कि.ग्रा. होता है।

3. **उपयोगिता (Utility)**– थारपारकर नस्ल की गाय का दूध उत्पादन 1600–2000 लीटर प्रति ब्यांत होता है बैल जुताई करने व गाड़ी खींचने के काम में लाये जाते हैं।

3. हरियाणा

1. **उत्पत्ति स्थान एवं वितरण (Origin and distribution)**– इस नस्ल का मूल स्थान हरियाणा क्षेत्र है यह नस्ल रोहतक, हिसार, करनाल, गुडगांव, दिल्ली व पंजाब में पाई जाती है हरियाणा नस्ल राजस्थान में अलवर, भरतपुर व हरियाणा से लगे क्षेत्र मे पाई जाती है।

हरियाणा

2. **विशेषताएँ (Characteristics)**– इस नस्ल के पशुओं का रंग सफेद या हल्का भूरा होता है शरीर सुडौल, सुगठित व सुदृढ़, कान छोटे व लटकते हुए, थूथन काला व नथूने चौडे, सींग लम्बे व पतले, गर्दन मजबूत लम्बी व खूबसूरत, कूबड उठा हुआ तथा अयन बड़ा व थन मध्यम आकार के होते है। हरियाणा नस्ल की गाय का भार 360 कि.ग्रा. व नर का भार 500 कि.ग्रा. होता है।

3. **उपयोगिता (Utility)**– हरियाणा नस्ल की गाय का दूध उत्पादन 1000 से 1500 लीटर प्रति ब्यांत होता है बैल जुताई करने व गाड़ी खींचने के लिए अच्छे माने जाते हैं।

4. नागौरी

1. **उत्पत्ति स्थान एवं वितरण (Origin and distribution)**– इस नस्ल का मूल स्थान राजस्थान मे जोधपुर व नागौर जिला है यह नस्ल राजस्थान मे जोधपुर, नागौर जिला व उससे लगे समीपवर्ती क्षेत्रों में पाई जाती है।

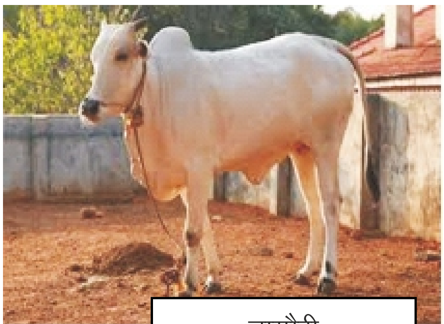
नागौरी

2. **विशेषताएं (Characteristics)**– इस नस्ल के पशुओं का रंग प्रायः सफेद व धूसर होता है शरीर सुगठित व शक्तिशाली, कान लम्बे, पीठ सीधी, गर्दन मजबूत, सींग मध्यम आकार के अन्दर की और झुके हुए, छाती चौड़ी, पैर सीधे व मजबूत, कूबड उठा हुआ, तथा अयन सामान्य होता है। नागौरी गाय का भार 400 कि.ग्रा. व नर का भार 500 कि.ग्रा. होता है।

3. **उपयोगिता (Utility)**– नागौरी नस्ल की गाय का दूध उत्पादन 600 से 900 लीटर प्रति ब्यांत तथा बैल कृषि कार्य व गाड़ी खींचने के लिए उत्तम माने जाते हैं।

5. मालवी

1. **उत्पत्ति स्थान एवं वितरण (Origin and distribution)**– इस नस्ल का मूल स्थान मध्य प्रदेश का मालवा क्षेत्र (जिला मन्दसौर, रतलाम, उज्जैन) है। मालवी नस्ल राजस्थान के चितौडगढ़, बासवाड़ा व झालावाड जिलों में पाई जाती है।

मालवी

2. **विशेषताएँ (Characteristics)**– इस नस्ल के पशुओं का रंग लोहा सा धूसर या हल्का सफेद होता है शरीर गठीला व छोटा, सींग छोटे व मोटे , कान छोटे चौकन्ने खडे हुए, गर्दन व टांगे छोटी तथा मजबूत होती है, मालवी गाय का भार 300 से 450 कि.ग्रा. तथा नर का भार 450 से 500 कि.ग्रा. होता है।

3. **उपयोगिता (Utility)**– मालवी नस्ल की गाय का दूध उत्पादन 700 से 900 लीटर प्रति ब्यांत होता है तथा बैल कृषि कार्य के लिए उपयुक्त माने जाते हैं।

6. मेवाती

1. **उत्पत्ति स्थान एवं वितरण (Origin and distribution)**– इस नस्ल का मूल स्थान

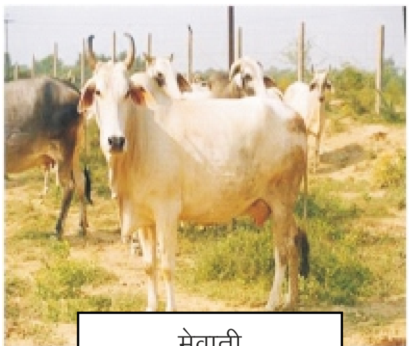
मेवाती

हरियाणा व राजस्थान को मेवात क्षेत्र माना जाता है, मेवाती नस्ल राजस्थान के अलवर, भरतपुर, जिलों में पाई जाती है।

2. **विशेषताएं (Characteristics)**– इस नस्ल के पशुओं का रंग सामान्यतः सफेद होता है परन्तु सिर, गला व कन्धे पर हल्का काला रंग भी पाया जाता है, शरीर मध्यम व ढीला ढाला, नथूने चौड़े, चेहरा लम्बा, सींग मध्यम व पीछे की और मुड़े हुए, कान छोटे व खड़े हुए, गर्दन छोटी व उठी हुई होती है गाय का अयन छोटा होता है। मेवाती गाय का भार 300 से 350 कि.ग्रा. तथा नर का भार 375 से 425 कि.ग्रा. होता है।

3. **उपयोगिता (Utility)**– मेवाती नस्ल की गाय का दूध उत्पादन 800 से 1000 लीटर प्रति ब्यांत होता है तथा बैल कृषि कार्य के लिए शक्तिशाली व तेज माने जाते हैं।

7. राठी

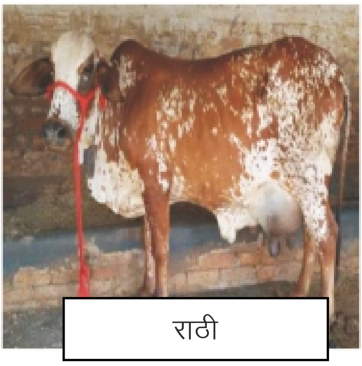

राठी

1. **उत्पत्ति स्थान एवं वितरण (Origin and distribution)**– इस नस्ल का मूल स्थान राजस्थान का पश्चिमी क्षेत्र माना जाता है यह नस्ल राजस्थान के जैसलमेर, गंगानगर व बीकानेर जिलों मे पाई जाती है।

2. **विशेषताएं (Characteristics)**– इस नस्ल के पशुओं का रंग हल्का सफेद हल्का लाल के रंग जैसा काले या लाल धब्बेदार होता है, शरीर ढीला ढाला मध्यम आकार का चेहरा चौड़ा, त्वचा ढीली, सींग छोटे व मोटे, गर्दन छोटी, गलकम्बल लटकता हुआ बड़ा तथा पूंछ लम्बी होती है, राठी गाय का भार 350 से 380 कि.ग्रा. व नर का भार 500 से 550 कि.ग्रा. होता है।

3. **उपयोगिता (Utility)**– राठी नस्ल की गाय का दूध उत्पादन 1200 से 1500 लीटर प्रति ब्यांत होता है जिसमें वसा प्रतिशत 4 से 4.5 प्रतिशत होती है तथा बैल खेती के काम आते हैं।

8. जर्सी

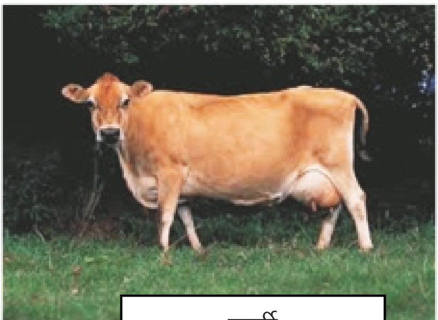

जर्सी

1. **उत्पत्ति स्थान एवं वितरण (Origin and distribution)**– इस नस्ल का मूल स्थान इंग्लिश चैनल का जर्सी द्वीप समूह माना जाता है यह नस्ल भारत व राजस्थान में भी अधिक दूध उत्पादन के लिए पाली जाती है।

2. **विशेषताएं (Characteristics)**– इस नस्ल के पशुओं का रंग हल्का लाल, बादामी, सफेद या लाल धब्बेदार होता है, शरीर लम्बा कूबड रहित, चेहरा चौड़ा कम लम्बाई का, कान बड़े, गर्दन छोटी, सींग छोटे, मध्यम लम्बाई के होते है अयन बड़ा, पूर्ण विकसित होता है। इस नस्ल की गाय जल्दी युवा हो जाती है। जर्सी गाय का भार 450 से 500 कि.ग्रा. होता है तथा नर का भार 600 कि.ग्रा. से 750 कि.ग्रा. होता है।

3. **उपयोगिता (Utility)**– जर्सी नस्ल की गाय का दूध उत्पादन 4000 से 4200 लीटर प्रति ब्यांत होता है जिसमें वसा प्रतिशत 4.5 से 5 प्रतिशत होती है तथा बैल कृषि कार्य के लिए अच्छे नही माने जाते हैं।

9. हॉलस्टीन–फ्रीजियन

हॉलस्टीन

1. **उत्पत्ति स्थान एवं वितरण (Origin and distribution)**– इस नस्ल का मूल स्थान हालैण्ड (नीदरलैण्ड) माना जाता है यह नस्ल दुनिया भर में दूध उत्पादन के लिए प्रसिद्व है तथा भारत व राजस्थान में भी बहुतायत में पाली जाती है।

2. **विशेषताएँ (Characteristics)**– इस नस्ल के पशुओं का रंग काला व बड़ी–बड़ी सफेद चित्तियो वाला होता है, शरीर आकार बड़ा, कूबड रहित, चेहरा बड़ा, सींग छोटे–छोटे या सींग रहित, सिर के ऊपर का भाग उभरा हुआ, कान मध्यम, अयन बड़ा थैले जैसा पूर्ण विकसित होता है। होलस्टीन–फ्रीजियन गाय का भार 600 से 650 कि.ग्रा. तथा नर का भार 900 से 1000 कि.ग्रा. होता है यह सबसे भारी नस्ल है।

3. **उपयोगिता (Utility)**– हॉलस्टीन फ्रीजियन नस्ल की गाय का दूध उत्पादन 5000 से 6000 लीटर प्रति ब्यांत होता है जिसमें वसा प्रतिशत 3.5 से 4 प्रतिशत होती है तथा बैल कृषि कार्य के लिए अच्छे नही माने जाते है।

13.2 भैंस की नस्लें (Breeds of Buffalo)

संसार की कुल भैंसो का लगभग 95 प्रतिशत एशिया महाद्वीप मे है। भारत में अधिकांश भैंसे ग्रामीण क्षेत्रों के पशुपालकों द्वारा पाली जाती है। भैंस को मुख्य रुप से दुग्ध उत्पादन तथा नर भैंसो (पाडा) कृषि कार्य करवाने के लिए पाला जाता है। विश्व की समस्त भैंसो को मुख्य रुप से दो वर्गो में बांटा गया है:–

1.अफ्रीकन

2.एशियन :– जंगली

पालतू :–रीवर

स्वैम्प

एशियन भैंस को पुनः दो वर्गो, जंगली और पालतू में वर्गीकृत किया गया है। पालतू एशियन को पुनः रीवर और स्वैम्प भैंसो के रुप में जाना जाता है। रीवर भैंसे मुख्य रुप से अधिक दूध देने वाली (1300–2000 लीटर 300 दिन में) होती है रीवर भैंसे भारत, पाकिस्तान तथा मध्य पूर्वी एशियाई देश जैसे यूनान, इटली, दक्षिण पूर्वी यूरोप तथा यू.एस.एस.आर. में पायी जाती है जबकि स्वैम्प भैंस बर्मा, मलेशिया, सिंगापुर, लाओस, कम्बोडिया, इन्डोनेशिया, फिलीपीन्स, थाईलैण्ड, वियतनाम, चाइना, ताइवान, हांगकांग तथा दक्षिणी पूर्वी एशिया के अनेक भागों में पायी जाती है। राजस्थान में भैंसों की संख्या 12.97 मिलियन है। भारत दुग्ध उत्पादन के क्षेत्र में विश्व में प्रथम स्थान रखता है, वैज्ञानिकों ने भैंस को ''ब्लैक डायमण्ड'' भी कहा है। अतः पशुपालक भैंस की अच्छी नस्ल सम्बन्धी उन्नत तकनीकि जानकारी प्राप्त करके ही भैंस पालन व्यवसाय को बढावा दे सकते है। हमारे देश में भैंस की 13 नस्लें पायी जाती है। भैसों की नस्लों को उनके आकार के अनुसार निम्नलिखित भागों में विभाजित किया जा सकता है–

1. भारी श्रेणी (Heavy breed) मुर्रा, जाफराबादी एवं नीली रावी

2. मध्यम श्रेणी (Medium breed) मेहसाना, भदावरी एवं नागपुरी

3. हल्की श्रेणी (Light breed) सूरती

मुर्रा (Murrah)

उत्पत्ति स्थान एवं वितरण (Origin & Distribution) : इस भैंस का मूल स्थान पश्चिमी उत्तरप्रदेश, दिल्ली, हरियाणा, पंजाब है। रोहतक, हिसार, उत्तरप्रदेश, राजस्थान, गुजरात के अनेक भागों में पायी जाती हैं। यह उत्तरी राजस्थान के जयपुर, जोधपुर, बीकानेर, कोटा एवं अजमेर संभाग में पायी जाती हैं।

विशेषताएं (Characteristics) : (1) इसका सिर छोटा व सींग छोटे एवं जलेबी के घेरे जैसे घुण्डीदार मुड़े हुए आकर्षक होते हैं। (2) इस नस्ल के पशु काले रंग के होते हैं परन्तु मुँह, पैर, पूँछ पर सफेद धब्बे पाये जाते हैं। (3) पशु का शरीर भारी किन्तु त्वचा मुलायम होती है। (4) अयन विकसित जिस पर थन छोटे एवं दूर–दूर होते हैं। यह विश्व की दूध देने वाली भैंसो की श्रेष्ठ नस्ल है। इसके नर पशुओं का शरीर भार 500–600 किग्रा. तथा मादा पशुओं का भार 500–550 किग्रा. होता है तथा प्रथम ब्यांत की उम्र 36–48 माह है।

उपयोगिता (Utility) :

दुग्ध क्षमता :– 1800–2500 लीटर प्रति ब्यांत

दूध मे वसा :– 7 प्रतिशत

मुर्रा भैंस

भदावरी (Bhadawari)

उत्पत्ति स्थान एवं वितरण (Origin & Distribution) : उत्तर प्रदेश के आगरा जिले का भदावर स्थान इसका मूल स्थान है। इसके अतिरिक्त यमुना–चम्बल की घाटी में बसे इटावा व ग्वालियर क्षेत्रों में पाई जाती है।

विशेषताएँ (Characteristics) : इस पशु की मुख्य विशेषता तांबे जैसी लालिमा लिये बादामी रंग हैं। शरीर मध्यम आकार का व आगे से पतला एवं पीछे से चौड़ा होता हैं। सींग चपटे, मोटें तथा पीछे की ओर मुड़कर ऊपर अन्दर की ओर मुड़ें होते हैं। अयन छोटा होता है, जिस पर दुग्ध शिराएँ उभरी रहती हैं। इसके नर पशुओं का शरीर भार 400–450 किग्रा. तथा मादा पशुओं का भार 350–400 किग्रा. होता है तथा प्रथम ब्यांत की उम्र 48–54 माह है।

उपयोगिता (Utility) :

दुग्ध क्षमता :– 900–1200 किग्रा. प्रति ब्यांत

दूध में वसा :–12–14 प्रतिशत

भदावरी भैंस

सूरती (Surti)

उत्पत्ति स्थान एवं वितरण (Origin & Distribution) : यह मूल रुप से गुजरात के आनन्द, नाडियाद, बड़ौदा तथा खेडा क्षेत्र से हैं। इस नस्ल की भैंस दक्षिण राजस्थान में पाई जाती है।

विशेषताएँ (Characteristics) : यह मध्यम आकार, भूरा या हल्का काला रंग, सींग छोटे दँराती (हँसिया) की आकृति के व चपटे होते हैं। इनकी प्रमुख विशेषता यह है कि पशु के जबड़े के नीचे तथा अधरवक्ष पर सफेद रंग की एक–एक पट्टी होती है। इसकी पीठ सीधी होती है तथा त्वचा मोटी होती है। अयन सुविकसित जो पीछे के पैरों में वर्गाकार रूप में स्थित होते हैं। इसके नर पशुओं का शरीर भार 450–500 किग्रा. तथा मादा पशुओं का भार 350–400 किग्रा. होता है तथा प्रथम ब्यांत की उम्र 42–48 माह है।

उपयोगिता (Utility) :

दुग्ध क्षमता :–1600–1700 किग्रा. प्रति ब्यांत

दुध मे वसा :– 7.5 प्रतिशत

सूरती भैंस

नीली (Nili)

उत्पत्ति स्थान एवं वितरण (Origin & Distribution) : यह पंजाब के फिरोजपुर व अमृतसर के नीली रावी तथा सतलज नदियों के क्षेत्र में पाई जाती हैं। सतलज नदी का पानी नीला हैं इसीलिए इस भैंस का नाम 'नीली' रखा गया। इसके अतिरिक्त यू.पी. के बरेली, मुरादाबाद व उत्तराखंड के रामपुर, नैनीताल जिलों में बहुतायत से मिलती हैं।

विशेषताएँ (Characteristics) : शरीर का रंग अधिकतर काला कभी–कभी भूरा भी मिलता हैं। माथे, चेहरे, थूथन तथा पैरों पर सफेद चिन्ह होते हैं। पशु मध्यम आकार के खुरदरे व भारी सिर वाले होते हैं। पूँछ भूमि को छूती हुई लम्बी व पतली जिसका अंतिम भाग गुच्छेदार व सफेद होता है। अयन सुविकसित, जिस पर कभी–कभी गुलाबी धब्बे पाये जाते हैं। इसके नर पशुओं का शरीर भार 580–600 किग्रा. तथा मादा पशुओं के शरीर का भार 400–450 किग्रा. तथा प्रथम ब्यांत की उम्र 40–48 माह है।

उपयोगिता (Utility) :

दुग्ध क्षमता :– 1500–1800 किग्रा. प्रति ब्यांत

दूध में वसा :– 8–10 प्रतिशत

नीली

जाफराबादी (Jaffarabadi)

उत्पत्ति स्थान एवं वितरण (Origin & Distribution) : इसका मूल स्थान गुजरात के गिर जंगलों तथा काठियावाड़ और जाफराबाद हैं।

विशेषताएँ Characteristics) : पशु का शरीर भारी भरकम तथा लम्बा होता हैं। रंग काला एवं इसका माथा भारी तथा उठा हुआ होता हैं। सींग चौड़ें तथा गर्दन की तरफ झुके होते हैं। सींग के आगे का भाग गोल छल्लेदार होता हैं। इसके नर पशुओं का भार 500–600 कि.ग्रा. तथा मादा पशुओं का भार 450–500 कि.ग्रा. होता है तथा प्रथम ब्यांत की उम्र 42 से 48 माह है।

उपयोगिता (Utility) :

दुग्ध क्षमता :– 900–1100 कि.ग्रा. प्रति ब्यांत

दूध में वसा :– 7–9 प्रतिशत

जाफराबादी

मेहसाना (Mehsana)

उत्पत्ति स्थान एवं वितरण (Origin & Distribution) : गुजरात के मेहसाना, बनासकांठा व सावरकांठा जिलों में मूल निवास हैं। यह राजस्थान के जालौर जिले में भी पाई जाती है।

विशेषताएँ (Characteristics) : यह नस्ल मुर्रा नर व सूरती भैंस के प्रजनन से प्राप्त हुई है। यह मध्यम आकार, सींग कुछ चौड़ें एवं अन्दर की तरफ मुड़ें हुए होते हैं। रंग काला एवं गर्दन लम्बी एवं सुन्दर होती है। अयन विकसित होता है। इसके नर पशुओं का शरीर भार 500–550 किग्रा. तथा मादा पशुओंका भार 400–475 किग्रा. होता है तथा प्रथम ब्यांत की उम्र :– 40–48 माह है।

उपयोगिता (Utility) :

दुग्ध क्षमता :– 1200–1700 किग्रा. प्रति ब्यांत

दूध में वसा :– 7–8 प्रतिशत

मेहसाना

13.3 बकरी की नस्लें (Breeds of Goat)

बकरी पालन भूमिहीन मजदूरों और छोटे एवं सीमान्त किसानों के जीवन निर्वाह का प्रमुख स्त्रौत है। बकरियों से दूध, मांस, खाल, बाल और खाद जैसे उत्पाद प्राप्त होते हैं। हमारे देश के राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने भी बकरी की उपयोगिता पहचान कर ही इसे गरीब आदमी की गाय का नाम दिया है। बकरी वातावरण की विपरीत परिस्थितियों में वनस्पतियों व झाड़ियों की पत्तियाँ खाकर भी जीवित रह सकती है। इसलिए सूखा ग्रस्त व पहाड़ी इलाकों मे भी बकरी पालन आसानी से किया जा सकता है। बकरी की आवश्यकताएँ एवं देखभाल अन्य किसी भी पशु की अपेक्षा कम और आसान है। राजस्थान में बकरियों की संख्या 21. 66 मिलियन है। भारत में बकरी की 20 नस्लें उपलब्ध है। **बकरी को रेगिस्तान का चलता–फिरता ''फीज' या रनिंग डेयरी एवं डबल एटीएम भी कहते है, क्योंकि इससे कभी भी दूध निकालकर ताजा ही उपयोग ले सकते है।** राजस्थान में बकरियों की तीन प्रमुख नस्लें पाई जाती है। सिरोही, मारवाड़ी, झकराना एवं झालावाड़ी।

जमुनापारी (Jamunapari)

उत्पत्ति स्थान एवं वितरण (Origin & Distribution) : उत्तर प्रदेश का इटावा जिला इस नस्ल का मूल उत्पत्ति स्थान माना जाता है। इस नस्ल की बकरियाँ यमुना तथा चम्बल नदी के बीच के क्षेत्र में अधिकांशतः पाई जाती हैं। इस नस्ल के शुद्ध वंशीय पशु उत्तर प्रदेश के इटावा जिले के चक्रनगर, सहासन गांव के आसपास के क्षेत्र में पाये जाते हैं।

विशेषताएँ (Characteristics) : जमुनापारी बकरियाँ बड़े आकार की होती है। इनका माथा चौड़ा और उठा होता है। इसके कान लम्बे लटके हुये एवं चौड़े होते हैं। मुँह लम्बा, नाक रोमन, सींग छोटे एवं चपटे होते हैं। इनके शरीर का रंग एक–सा नही होता परन्तु प्रायः सफेद शरीर जिस पर भूरे, काले या चमड़े के रंग के धब्बे हो सकते है। टांगे लम्बी होती है। पिछली टांगो पर लम्बे घने बाल होना इस नस्ल की विशेषता है। वयस्क बकरे का शरीर भार 90 किग्रा. तक तथा बकरी का शरीर भार 60 किग्रा. तक होता है।

जमुनापारी

उपयोगिता (Utility) : इस नस्ल के पशु दुग्धोत्पादन तथा मांसोत्पादन के लिये पाले जाते हैं। इस नस्ल के पशु कठोर तथा ग्रामीण इलाको में पालने के लिये उपयुक्त रहते हैं। 250 दिन के दुग्ध काल में बकरियाँ 360 से 544 किलोग्राम तक दूध देती हैं। जिसमें औसतन 3.5 – 5.0 प्रतिशत दुग्ध वसा होती है।

बरबरी (Barbari)

उत्पत्ति स्थान एवं वितरण (Origin & Distribution) : बरबरी नस्ल का मूल उत्पत्ति स्थान पूर्वी अफ्रीका के ब्रिटिश सोमानिया का बरबरा क्षेत्र माना जाता है। इस नस्ल के पशु दिल्ली, हरियाणा के गुडगाँव करनाल तथा उत्तर प्रदेश के एटा, मथुरा, आगरा, अलीगढ में पाये जाते हैं।

विशेषताएँ (Characteristics) : इस नस्ल का रंग सफेद भूरा जिस पर कत्थई या काले धब्बे होते हैं। इसके कान छोटे हिरनी जैसे, पैर छोटे एवं हडिडयाँ सुन्दर होती हैं। इस

नस्ल के पशु बाँधकर घर पर पालने के लिये खास तौर पर शहरों के लिये उपयुक्त है। इस का अयन विकसित तथा थन लम्बे होते हैं। वयस्क बकरे का शरीर 38 किग्रा. तथा बकरी का शरीर भार 23 किग्रा. तक होता है।

बरबरी

उपयोगिता (Utility) : ये बकरियाँ प्रतिदिन औसत 1 से 1.25 किग्रा. दूध देती हैं। जिसमें 4.5 – 5.0 प्रतिशत वसा होती है। इस नस्ल की बकरियाँएक दिन में अधिकतम 2.5–3.0 किग्रा. तक दूध दे देती है। 12–15 माह की अवधि में ये बकरियाँ अक्सर दो बार ब्याती है। तथा एक बार में अक्सर दो बच्चे देती हैं। मांस एवं दूध दोनों के लिये यह नस्ल उपयुक्त है।

बीटल (Beetal)

उत्पत्ति स्थान एवं वितरण (Origin & Distribution) इस नस्ल का उत्पत्ति स्थान पंजाब का गुरूदासपुर जिला है। बीटल नस्ल की बकरियाँ पंजाब के गुरूदासपुर, अमृतसर, पटियाला तथा मलेट कोटला क्षेत्र के अलावा पाकिस्तान के झेलम, गुजरावाला, समालकोट के क्षेत्र में पाई जाती है। रावी नदी के क्षेत्र में इस नस्ल के उत्तम पशु पाये जाते हैं।

विशेषताएँ (Characteristics) : जमुनापारी नस्ल की बकरी से मिलती जुलती ये बकरियाँ छोटे कद की होती है। इसका रंग सामान्यतः काला कत्थई और कभी –कभी सफेद पर कत्थई धब्बेदार होता है। बकरो में सामान्यतः दाढ़ी होती है। इस नस्ल की नाक रोमन, कान लम्बे, सींग समतल परन्तु वे बाहर और भीतर पीछे की ओर घुमावदार होते हैं। बकरों का वजन 75 किग्रा. तथा बकरियों का 50 किग्रा. तक होता है।

बीटल

उपयोगिता (Utility) : यह नस्ल दूध और मांस दोनों के लिए उपयुक्त है। बीटल नस्ल की बकरियाँ औसतन 1.8 किग्रा. दूध प्रतिदिन देती है। अधिकतम दूध उत्पादन 5.2 किग्रा. प्रतिदिन है।

टोगनबर्ग (Toggenberg)

उत्पत्ति स्थान एवं वितरण (Origin & Distribution) : इस नस्ल का मूल स्थान पूर्वोत्तर स्वीटजरलैण्ड की ऊँची पहाड़ियों की टोगनबर्ग घाटी है।

विशेषताएँ (Characteristics) : इसके शरीर का रंग हल्का भूरा होता है जिस पर सफेद या कत्थई रंग के धब्बे होते हैं। चेहरे के दोनो तरफ कानों से थूथन तक सफेद या हल्के भूरे रंग की पट्टी होती है। पूँछ की तरफ जाँघो में अन्दर की तरफ तथा घुटनों से नीचे तक पैर सफेद होते हैं। यह नस्ल सींग रहित होती है। इसके कान छोटे सीधे होते हैं। मुँह छोटा एवं सीधा होता है। पशु छोटे आकार के होते हैं। शरीर के बाल चिकने होते हैं। शरीर के पिछले हिस्से पर लम्बे बाल होते हैं। सींग नहीं होते हैं।

टोगनवर्ग

उपयोगिता (Utility) : यह बकरी की एक दुधारू नस्ल है। जिसका औसत दूध उत्पादन 5–6 किग्रा. प्रतिदिन है । जिसमें 3–4 प्रतिशत वसा होती है। ये बकरियाँ लगातार 2 साल तक भी दूध देती रहती हैं।

सिरोही (Sirohi)

उत्पत्ति स्थान एवं वितरण (Origin & Distribution) : यह राजस्थान के सिरोही जिले की नस्ल है। समीपवर्ती अजमेर, उदयपुर, राजसमंद एवं भीलवाड़ा जिले में भी यह बकरी पाई जाती हैं।

विशेषताएँ (Characteristics) : इसका रंग प्रायः लाल तथा भूरे बादामी कभी–कभी काले चित्तिदार धब्बे होते हैं, सिर छोटा, कान लम्बे तथा लम्बी गर्दन, थन लम्बे, मांसल व मोटे होते हैं। इसकी पीठ में हल्का सा झोल (Depression) होता है। टांगे लम्बी व पिछली टागों पर मध्यम लम्बे बाल होते हैं।

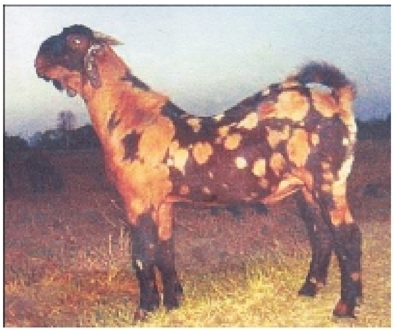

सिरोही बकरा

उपयोगिता (Utility) : यह द्विप्रयोजनीय नस्ल दूध व मांस के लिए पाली जाती है। यह बकरी 1–1.5 लीटर प्रतिदिन दूध देती है।

13.4 भेड़ की नस्लें (Breeds of Sheep)

राजस्थान का अधिकांश भाग शुष्क और मरू क्षेत्र के अंतर्गत आता है। इसलिए राजस्थान में भेड़ पालन एक बहुत ही महत्वपूर्ण और लाभकारी व्यवसाय है क्योंकि यहाँ पर फसल उत्पादन, वर्षा की कमी तथा अनिश्चितता होने के कारण सफल व्यवसाय नही है। राजस्थान को भेड़ों का घर कहा जाता है। भेड़ पालन समाज के आर्थिक रूप से पिछड़े वर्ग तथा भूमिहीन मजदूरों एवं छोटे तथा सीमान्त किसानों, गृहणियों तथा पढ़े–लिखे बेरोजगारों द्वारा सफलतापूर्वक अपनाया जाता हैं। भेड़ पालन आमतौर पर भारतवर्ष की सभी प्रकार की जलवायु एवं परिस्थितियों में सफलतापूर्वक अपनाया जा सकने वाला पशु व्यवसाय है। भेड़ पालन से मुख्यतः मांस एवं ऊन आदि पशु उत्पाद प्राप्त होते हैं। देश में 42 भेड़ की नस्लें हैं जिनमें अधिकांशतः भेड़ नस्ल गलीचा किस्म की ऊन का ही उत्पादन करती है। भारतवर्ष में पाई जानी वाली चोकला नस्ल तो विश्व की सर्वोत्तम गलीचा नस्ल की भेड़ मानी जाती है। राजस्थान में भेड़ों की कुल जनसंख्या 9.08 मिलियन हैं ।

मारवाड़ी (Marwari)

उत्पत्ति स्थान एवं वितरण (Origin & Distribution) : यह भेड़ मारवाड क्षेत्र जैसे जोधपुर, पाली, नागौर, जालौर, बाड़मेर व सिरोही तथा इन जिलों के आस–पास के क्षेत्रों में पाई जाती हैं ।

विशेषताएँ (Characteristics) :

- शरीर मध्यम आकार का एवं चेहरा काले रंग का होता है तथा रंग गर्दन के निचले भाग तक फैला रहता है।
- कान छोटे तथा अंदर की ओर मुड़े होते हैं।
- पूँछ पतली व छोटी से मध्यम लम्बाई की होती है।
- नर व मादा भेड़ दोनों सींग रहित होते हैं।
- नर का औसतन भार 28–35 किग्रा. व औसतन लंबाई व ऊँचाई क्रमशः 66–70 तथा 56–60 सेमी तथा मादा का भार लगभग 25–30 किग्रा. होता है ।
- शरीर सुगठित, मजबूत तथा टांगे लंबी एवं मजबूत होती है जिसके कारण इस नस्ल की भेड़ें दूसरी नस्ल की भेड़ों की तुलना में अधिक दूरी तक चलने में सक्षम होती हैं।
- राजस्थान की अन्य भेड़ों की तुलना में ज्यादा स्वस्थ रहती है।
- ठण्डे एवं गर्म मौसम को सहन करने की शक्ति अधिक होती है।

मारवाड़ी

उपयोगिता (Utility) :

- प्रतिवर्ष 1.5 से 2.3 किग्रा. सफेद व अधिक मोटी श्रेणी की ऊन प्राप्त होती है।
- इस नस्ल के रेवड में वार्षिक जीवित दर 90 प्रतिशत से अधिक होती है।
- नर का भार 27 से 36 किग्रा. तथा मादा का भार 23 से 30 किग्रा. होता है।

चोकला (Chokla)

उत्पत्ति स्थान एवं वितरण (Origin & Distribution) : यह नस्ल मुख्य रूप से राजस्थान के शेखावटी क्षेत्र जिसमें चुरू, झुंझुनू, सीकर, नागौर, जोधपुर जिलों के रेगिस्तानी क्षेत्रों में पाई जाती हैं। इस नस्ल को छापर और शेखावटी के नाम से भी जाना जाता है ।

विशेषताएँ (Characteristics) :

- मुँह गहरे भूरे रंग का होता है जो कि सिर तथा नीचे आधी गर्दन तक फैला रहता है।
- शरीर मध्यम एवं वर्गाकार होता है।
- कान छोटे एवं नर व मादा भेड़ दोनों सींग रहित होते है ।
- पूँछ पतली, मध्यम लंबाई (लगभग 24 सेमी.) की होती है।

- इन भेड़ो की लंबाई एवं ऊँचाई एक समान होती है जिससे पशु वर्गाकार दिखाई देते हैं ।
- यह भेड़ सींग रहित होती है।

चोकला

उपयोगिता (Utility) :

- नर का औसत भार 30–40 किग्रा. व मादा का 24–32 किग्रा. होता है ।
- प्रतिवर्ष 1.5 से 2.5 किग्रा. सफेद ऊन प्राप्त होती है।

मालपुरा (Malpura)

उत्पत्ति स्थान एवं वितरण (Origin & Distribution) : इन नस्ल का नाम टोंक जिले की मालपुरा तहसील के नाम पर पड़ा है। यह मुख्य रूप से मांस उत्पादन नस्ल है। यह भेड़ें मुख्य रूप से जयपुर, टोंक, अजमेर बून्दी जिलों में एवं इनके आस पास के क्षेत्रों में पाई जाती हैं ।

विशेषताएँ (Characteristics) :

- शरीर की बनावट मजबूत व गठीली होती है।
- चेहरा हल्के भूरे रंग का, कान छोटे व मुड़े हुए तथा पूँछ पतली और मध्यम लंबाई की होती है।
- मुँह, पेट व टांगों पर ऊन नही होती है एवं दोनो नर एवं मादा भेड़ सींग रहित होते हैं।
- नर का भार लगभग 33–40 किग्रा. तथा औसत लंबाई व ऊँचाई क्रमशः 68.74 व 67.72 सेमी. तथा मादा का भार लगभग 24–30 किग्रा. व औसत लंबाई व चौड़ाई क्रमशः 61–65 तथा ऊंचाई 60–64 सेमी. होती हैं ।

मालपुरा

उपयोगिता (Utility) :

- ऊन सफेद व अधिक मोटी किस्म एवं 1.1 से 1.6 किग्रा ऊन प्राप्त होती है जो नमदा बनाने के काम आती है।
- नर भेड़ का शरीर भार 30 से 34 किग्रा. व मादा का 25 से 30 किग्रा. तक होता है

मेरिनो (Merino)

उत्पत्ति स्थान एवं वितरण (Origin & Distribution) : इस नस्ल का मूल उत्पत्ति स्थान स्पेन है वही से यह नस्ल पूरे विश्व में पहुँच गई है।

विशेषताएँ (Characteristics) : यह मजबूत प्रकृति की नस्ल है जो विपरीत कृषि–जलवायु परिस्थितियों में भी जीवन यापन कर लेती है। मेरीनो भेड़ों का रंग सफेद होता है। इसका सिर मध्यम आकार का होता है। जो ऊन से ढका रहता है । नर में घुमावदार सींग होते है। जबकि मादा भेड़ें सींग रहित होती है। इस नस्ल के पशुओं की गर्दन तथा कंधों की त्वचा में झुर्रियाँ या सलवटें होती हैं। इसमें नर का शरीर भार लगभग 90 किग्रा. तथा मादा का लगभग 70 किग्रा. होता है।

मेरिनो

उपयोगिता (Utility) : उत्तम किस्म तथा अधिक ऊन के उत्पादन हेतु यह भेड़ की सर्वोत्तम नस्ल है। एक भेड़ से प्रतिवर्ष 5–9 किग्रा. तक ऊन प्राप्त होती है। यह नस्ल अच्छी किस्म की ऊन प्राप्ति के लिये भारत सहित कई देशों में संकरण के लिये ले जाई गई हैं।

कराकुल (Karakul)

उत्पत्ति स्थान एवं वितरण (Origin & Distribution) : यह नस्ल मध्य एशिया में उत्पन्न मानी जाती है जो कि काफी संख्या में इरान, इराक, अफगानिस्तान, दक्षिण अफ्रीका तथा पश्चिम यूरोप के कुछ भागों में पायी जाती है।

विशेषताएँ (Characteristics) : इस नस्ल के मेढ़ों (नर) में सींग होते हैं। जबकि मादा सींग रहित होती है। यह मध्यम आकार की नस्ल है।

कराकुल

उपयोगिता (Utility) : इसमें नर का वजन 90 किग्रा. तथा मादा का वजन 60 किग्रा. होता है। यह नस्ल मांस के लिये उपयोगी है। इस नस्ल को खासतौर से पेल्ट के लिए पाला जाता है। इसके मेमनों को कम उम्र में ही मार कर उनसे घुंघराली ऊन वाली खाल प्राप्त की जाती हैं जिससे टोपी या सर्दियों के लिये महंगे वस्त्र बनाये जाते हैं।

अविवस्त्र (Avivastra)

उत्पत्ति स्थान एवं वितरण (Origin & Distribution): यह नस्ल केन्द्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान अविकानगर, मालुपरा जिला टोंक पर रेम्बूले नस्ल के मेरिनों मेढ़ों तथा राजस्थान की चौकला नस्ल की भेड़ के वर्ण संकरण से विकसित की गई है।

विशेषताएँ (Characteristics) : इन भेड़ों का औसत वजन 6 माह की उम्र पर 12 किग्रा. तथा एक वर्ष की उम्र पर 23 किग्रा. देखा गया है ।

अविवस्त्र

उपयोगिता (Utility) : इस नस्ल की भेड़ों से 2 से 4 किग्रा. ऊन प्रति भेड़ प्राप्त होती है इनके मेमनों की वार्षिक जन्म दर 93. 21 प्रतिशत देखी गई है।

अविकालीन (Avikalin)

उत्पत्ति स्थान एवं वितरण (Origin & Distribution) : इस नस्ल की भेड़ रेम्बूले नस्ल के मेरीनों मेढ़ों (नर) तथा मालपुरा नस्ल की भेड़ों (मादा) के संकरण से तैयार की गई है। इन्हें भी केन्द्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान अविका नगर, मालपुरा जिला टोंक पर विकसित किया गया हैं।

विशेषताएँ (Characteristics) : इस नस्ल की भेड़ों की ऊन पतली होती हैं। एक वर्ष की उम्र पर इस नस्ल की भेड़ों का शारीरिक वजन 25 किग्रा होता है।

अविकालीन

उपयोगिता (Utility) : इन भेड़ों से 6 माह में लगभग 1.13 किग्रा. ऊन प्राप्त होती है। इन भेड़ों में टपिंग 97.95 व मेमनों के पैदा होने का प्रतिशत 81.47 होता है। इसकी ऊन से उत्तम किस्म की कालीनें बनाई जाती हैं।

जैसलमेरी (Jaisalmeri)

उत्पत्ति स्थान एवं वितरण (Origin & Distribution) : यह नस्ल जैसलमेर के अलावा जोधपुर तथा बाड़मेर जिलों की पश्चिमी सीमाओं पर मुख्य रूप से पाई जाती है। जैसलमेर जिला इसका जन्म स्थान होने के कारण जैसलमेरी नाम रखा गया है।

विशेषताएँ (Characteristics) :

- राजस्थान की अन्य सभी भेड़ नस्लों से यह अधिक बड़े आकार की होती है।
- इनकी शारीरिक बनावट सुदृढ़, हष्टपुष्ट और वर्गाकार होती है ।
- सिर बड़ा तथा नाक रोमन प्रकार की होती है ।
- चेहरा काला या गहरे भूरे रंग का होता है तथा यह रंग गर्दन व गर्दन के नीचे आधे भाग तक फैला रहता है ।
- कान लम्बे तथा खम्बदार लटके हुए होते हैं। इन भेड़ों के सींग नहीं होते तथा पूँछ मध्यम से लम्बे आकार की होती है जिसकी लम्बाई लगभग 28 सेमी. होती है ।
- नर का भार लगभग 32–45 किग्रा. तथा औसत लंबाई व ऊँचाई क्रमशः 68.55 व 66.91 सेमी. तथा मादा का भार लगभग 30–36 किग्रा. व औसत लंबाई व ऊँचाई क्रमशः 67.66 व 66.43 सेमी. होती है ।

जैसलमेरी

उपयोगिता (Utility) :

- ऊन सफेद व मध्यम से उत्तम श्रेणी की होती है इन भेड़ों से 1.8–3.2 किग्रा. ऊन प्राप्त होती है ।
- नर का वजन 32 से 45 किग्रा. तथा मादा का 30 से 36 किग्रा. होता है। अधिक भार होने के कारण माँस भी अधिक प्राप्त होता है।

13.5 ऊँट की नस्लें (Breeds of Camel)

ऊँट राजस्थान के रेगिस्तान का एक महत्वपूर्ण पशु है। इसका उपयोग कई कार्यो में होता है। इसे सवारी करने, भार ढोने, हल जोतने, रहट चलाने, ईख पेरने तथा गाड़ियों में जोतने के काम में लाया जाता है। सवारी करने, हल जोतने, रहट चलाने व गाड़ी में भार ढोने के लिए रेगिस्तानी क्षेत्रों में इसे सबसे ज्यादा उपयुक्त पाया गया है। पहाड़ी क्षेत्रों में भी इसे भार ढोने के लिये काम लेते है। एक ऊँट एक बैल जोड़ी के बराबर काम कर सकता है। ऊँट के बालों से कम्बल बनाये जाते हैं। इस पशु में अनेक विशेषताएँ है। वह शुष्क क्षेत्रों में सुगमता से रखा जा सकता है, भारी बोझढ़ो सकता है और कई दिन तक बिना पानी के भी रह सकता है। इन विशेषताओं के कारण सूखे क्षेत्रों में भारवाही पशु के रूप में यह बहुत उपयोगी है। सन् 2012 पशु गणना के अनुसार राजस्थान में ऊँटों की संख्या 0.32 मिलियन है।

ऊँट दो प्रकार के होते है – एक कूबड़ वाले ऊँट और दो कूबड़ वाले ऊँट। भारत में पाई जाने वाली ऊँटों की मुख्य प्रजातियाँ बीकानेरी, जैसलमेरी, मेवाड़ी, कच्छी और सांचोरी हैं। नर ऊँट का औसत भार लगभग 500–750 किग्रा और मादा ऊँट का औसत भार लगभग 400–600 किग्रा. होता है। जन्म के समय बच्चे का भार 35–40 किग्रा. होता है।

कार्य के आधार पर भारतीय ऊँटों को दो भागो में बांटा जा सकता है–सामान ढोने वाले और सवारी वाले ऊँट। सामान ढोने वाला ऊँट हट्टा–कटटा और सवारी वाले का शरीर हल्का होता है। राजस्थान में ऊँट की तीन मुख्य नस्लें पाई जाती हैं – (1) बीकानेरी (2) जैसलमेरी (3) मेवाड़ी।

बीकानेरी (Bikaneri)

उत्पत्ति स्थान एवं वितरण (Origin & Distribution): इसका मूल स्थान राजस्थान का बीकानेर क्षेत्र है और इस नस्ल के ऊँट बीकानेर से दूसरी जगह ले जाये जाते है। बीकानेर के जोहड़बीड़ में ''राष्ट्रीय ऊष्ट्र अनुसंधान केन्द्र'' है। यह नस्ल सिंधी एवं बलुची ऊँटों के संकरण से तैयार हुई है।

विशेषताएँ (Characteristics) : ऊँट का रंग ज्यादातर गहरा भूरा यानि काले से रंग का होता है। ऊँट की ऊँचाई जमीन से थुई तक 10 से 12 फीट तक होती है। शरीर गठीला एवं मजबूत होता है। आँखे गोल व बड़ी होती है। खोपड़ी गोलाकार एवं उठी हुई होती है। जहाँ खोपड़ी आगे की ओर खत्म होती हैं वहाँ एक गड्डा होता है जिसे 'स्टॉप' कहते है जो इस नस्ल की खास पहचान है। ऊँट की आँखों, कानों एवं गले पर लम्बे–लम्बे काले बाल पाये जाते हैं। सिर मंझले दर्जे का एवं भारी होता है। आँखे चमकदार एवं बाहर निकली हुई होती हैं। आँखो के ऊपर

की तरफ गड्डा सा होता है जहाँ से नाक की हड्डी ऊपर उठी हुई दिखाई देती है इससे यह नस्ल सुंदर लगती है। वर्तमान में जो नस्ल बीकानेरी ऊँट की है वह विश्व के ऊँटों में सबसे सुंदर नस्ल है। आँखो की भौंहों व पलकों पर घने काले बाल होते हैं। कान छोटे–छोटे और ऊपर से गोलाई लिये हुए होते हैं। गर्दन मंझले आकार की नीचे से गोलाई लिये हुए होती है। थुई बड़ी एवं पीठ के बीच में होती है। छाती की गद्दी अच्छी सुदृढ़ होती है जो इसको बैठे रहने में सहायक होती है। अगले पैर लम्बे, सीधे और मजबूत हड्डियों वाले होते हैं पिछले पैर अगले पैरों की अपेक्षा कमजोर एवं अंदर की ओर मुड़े हुए होते हैं। पूँछ के दोनों तरफ व नीचे की ओर लम्बे–लम्बे काले बाल होते हैं। अण्डकोश गोल एवं बड़े होते हैं एवं पीछे से देखने पर दिखाई देते हैं। मादा ऊँटों में थन बड़े–बड़े एवं चूचक के दो–दो छेद होते हैं। दूध की वाहिनी बड़ी व उन्नत होती है।

बीकानेरी

उपयोगिता (Utility) : इस नस्ल के ऊँट सभी कामों के लिए उपयुक्त है। ज्यादातर इसे बोझा ढोने एवं कृषि कार्यों में काम में लिया जाता है।

जैसलमेरी (Jaisalmeri)

उत्पत्ति स्थान एवं वितरण (Origin & Distribution): जैसलमेर जिले के थार के रेगिस्तान में थारपारकर केंट से उत्पन्न हुए है जो पाकिस्तान के सिन्ध प्रान्त में पाये जाते हैं।

विशेषताएँ (Characteristics) : इस नस्ल के ऊँट का रंग हल्के भूरे रंग का होता है एवं ऊँचाई 7 से 9 फीट तक होती है। ऊँट का शरीर छोटा एवं पतला होता है। आँखे चमकदार एवं सिर के अनुपात से बडी होती हैं। इस नस्ल के ऊँटों का कपाल उठा हुआ नही होता एवं स्टॉप भी नही होता जो कि बीकानेरी नस्ल में होता है। कान छोटे एवं पास–पास होते है। पैर पतले व हड्डियाँ छोटी–छोटी होती है। पैरों के तलवे भी छोटे व हल्के होते हैं जो तेज चलने में सहायक होते हैं।

जैसलमेरी

उपयोगिता (Utility) : इस नस्ल के ऊँट सवारी के लिए उपयुक्त है। एक प्रशिक्षित ऊँट एक ठंडी रात में 100 से 140 किमी. तक यात्रा कर सकता है। रेगिस्तान में पुलिस एवं सेना के कार्यों के लिए उपयुक्त है।

मेवाड़ी (Mewari)

उत्पत्ति स्थान एवं वितरण (Origin & Distribution): उदयपुर क्षेत्र को मेवाड़ कहा जाता है जो कि अरावली की पहाड़ियों में बसा हुआ है। पुराने जमाने में सामान लाने ले जाने एवं यात्रा हेतु यहाँ पंजाब से ऊँट लाये गये थे इन ऊँटों ने अपने आपको इस क्षेत्र के अनुकूल ढाल लिया एवं धीरे–धीरे एक नस्ल का रूप ले लिया जिसे इस क्षेत्र के लोग इन ऊँटों को मेवाड़ी कहने लगे। यह नस्ल राजस्थान के पहाड़ी क्षेत्रों से लेकर गुजरात तक फैली हुई है।

विशेषताएँ (Characteristics) : इस नस्ल के ऊँट की लम्बाई मध्यम आकार की होती है। रंग हल्का भूरा होता है। आँखे छोटी–छोटी एवं सुस्त होती हैं। पैर छोटे एवं तलवे कठोर होते हैं। हड्डियाँ मोटी एवं मजबूत होती हैं। मुँह के नीचे का होंठ गिरा हुआ होता है। जो इस नस्ल की खास पहचान है। सिर बड़ा एवं भारी होता है। गर्दन भी छोटी एवं मोटी होती है। शरीर पर बाल घने, सख्त एवं मोटे होते हैं। मेवाड़ी ऊँट की औसत गति 3 से 5 मील प्रति घंटा है।

मेवाड़ी

उपयोगिता (Utility) : इस नस्ल के ऊँट कृषि कार्यों एवं भार ढोने के काम में लिये जाते हैं। इस नस्ल की मादा लगभग 4–6 लीटर दूध प्रतिदिन देती है।

ऊँट का प्रबन्धन (Management of Camel)

स्वभाव में ऊँट एक धैर्यवान, सहनशील प्राणी माना जाता है। अन्य पालतू पशुओं की अपेक्षा इसे साधना या सिखाना कठिन है। प्रजनन काल में नर ऊँट उत्तेजित एवं उत्पाती प्रवृति का होता है। ऊँट झुण्ड में रहना पसन्द करता है। इसमें अपना मार्ग याद रखने की अद्भुत क्षमता होती हैं। कई वर्षो के अन्तराल के बाद भी ऊँट सरलता से अपने स्थान पर पहुँच जाता है। अन्य पालतू पशुओं की भाँति यह अपने पालक के साथ सामान्यतया बहुत घनिष्ठ नहीं हो पाता है।

सदियों से मरूस्थलीय प्रदेश की कठिन परिस्थितियों में रहते–रहते इसकी शारीरिक बनावट भी उसी के अनुकूल हो गई है जिनका विवरण निम्न प्रकार है –

1. विशाल शरीर के कारण तेज धूप सहन नही कर पाता किन्तु बड़े आकार के ऊँट छोटे आकार के ऊँट की अपेक्षा दिन की गर्मी में धीरे–धीरे गरम होता है। यह रेगिस्तान में पानी की खोज में दूर–दूर तक जा सकता है।
2. कूबड़ ऊँट की एक विशेषता है। यह आकार में लगभग 50 सेमी. ऊँची और 200 सेमी. घेरदार होती है।
3. इसकी त्वचा के नीचे वसा की तह नही के समान होने के कारण शरीर के अतिरिक्त ताप को निकालने में इसे सुविधा रहती है।
4. इसके पैर के पंजो की हड्डियाँ चौड़ी व चपटी होती है जो गद्देदार चमड़ी में धँसी होती है। ऊँट के चलने पर दबाव के कारण गद्देदार पंजा फैलता है और रेत में सुदृढ़ पकड़ पैदा करता है इस कारण ऊँट रेतीली भूमि पर सुगमता से चल सकता है। इसी क्षमता के कारण इसे ''रेगिस्तान का जहाज'' (Ship of Desert) कहते है।
5. ऊँट के वक्षस्थल एवं चारों पैरों के घुटनों पर मोटी कठोर त्वचा की गद्दी होती है। ऊँट जब बैठता है तब केवल यही भाग भूमि के सम्पर्क में आता है। शरीर के अन्य भाग ऊँचाई पर रहते हैं।
6. ऊँट की गर्दन व सिर का कठिन परिस्थितियों में जीवित रह पाने में एक महत्वपूर्ण योगदान होता है। इसके होंठ अत्यधिक संवेदनशील होते हैं जिससे कंटीली झाडियों एवं वृक्षों से पत्तियाँ चरते हुए कांटें चुभने से बचाव होता है। इसकी उभरी भौंहे सूर्य प्रकाश के चकाचौंध से आँखो को बचाती हैं।

आहार व्यवस्था – ऊँट प्रतिदिन अपने शरीर के भार का 1.5–2.0 प्रतिशत चारा शुष्क पदार्थ के रूप में ग्रहण कर सकता हैं ऊँटों को निम्न तालिका के अनुसार खिलाना चाहिए :–

आयुवर्ग	चारा (किलोग्राम प्रतिदिन)	दाना मिश्रण (किलोग्राम प्रतिदिन)
6 माह तक	2.5	0.5
6–12 माह तक	2.5	0.5
1–2 वर्ष	5.0	1.0
2–3 वर्ष	8.0	1.5
3 वर्ष के उपरान्त	12.0	2.5
नर (प्रजनन हेतु)	14.0	3.0

तालिका

इसके अतिरिक्त नमक 30–80 ग्राम प्रतिदिन प्रति पशु देना आवश्यक है। गर्भकाल के अन्तिम चरणों में, दूध देने वाले पशुओं में व बोझा ढोने का काम करने वाले ऊँटों को लगभग 25 प्रतिशत अतिरिक्त पोषक तत्व आहार के रूप में उपलब्ध कराना चाहिये ।

सन्तुलित आहार बनाने के लिये मिश्रण तैयार कर सकते है –

1. भूसा और फलीदार चारा 1:1 ।
2. भूसा और मोठ या ग्वार फलगट्टी 65:35 ।

ऊँट प्रायः शुष्क चारा ही पसन्द करता है, किन्तु यदि लगभग 25 प्रतिशत हरा चारा उपलब्ध कराया जाये तो अच्छा रहता है।

1. **वर्षा ऋतु** – वानस्पतिक उत्पादन में वर्षा ऋतु का बहुत महत्व है । मानसून के प्रारम्भ होते ही जुलाई में भ्रूट, अंजन, सेवन, बेकरिया, गोखरू, गंठील, लांपला इत्यादि अनेक प्रकार की घास पनपने लगती हैं परन्तु यह जुलाई के प्रारम्भ में अत्यन्त छोटे होने के कारण चराई योग्य नहीं होती हैं। अगस्त, सितम्बर एवं अक्टूबर माह में पर्याप्त चरागाह उपलब्ध हो जाता है। इन घासों के अतिरिक्त खेतों में मोठ, ग्वार, बाजरा आदि उपलब्ध होने लगता हैं। इन्ही दिनों बोरड़ी का पाला, खेजड़ी, लुंग व फोग चारा

भी काटकर एकत्र किया जाता हैं जिसे आवश्यकता पड़ने पर खिलाया जाता है। वर्षा ऋतु में चने का भूसा विशेष रूप से बाजार में उपलब्ध होता है।

2. **शीत ऋतु** – नवम्बर में शीत ऋतु प्रारम्भ होते ही चर भूमियों की प्राकृतिक घास सूख जाती है तथा पेड़ों की पत्तियाँ झड़ने लगती हैं। पाला, मोठ चारा व ग्वार फलगट्टी आदि मुख्य सूखा चारा उपलब्ध होता है तथा हरे चारे में सिंचित खेती से सरसों, रिजका, जई, मेंथी बरसीम आदि उपलब्ध होते हैं।
3. **ग्रीष्म ऋतु** – गर्मी का प्रारम्भ मार्च – अप्रेल की बसन्ती बहार से होता है जब ऊँटों को पुष्प रंजित फोग, बावली, केर इत्यादि वनस्पतियाँ इस शुष्क काल में भी उपलब्ध हो जाती हैं। मई माह में खेजड़ी, जाल, नीम आदि चारे के प्रमुख स्त्रौत रह जाते हैं। खेजडी, लुंग एक सर्वप्रिय पात चारा है। सिंचित दशा में उगाये गये एम.पी. चरी, बाजरा, चंवला आदि सभी चारे उपलब्ध कराये जा सकते हैं।

ऊँट की प्रजनन व्यवस्था

1. मादा ऊँट (सांडिनी) 3–4 वर्ष की आयु पर गर्भ धारण करने में सक्षम होती है तथा ऊँट 5–6 वर्ष की आयु पर प्रजनन के उपयोग में लिया जा सकता है।
2. नर ऊँटों की भाँति सांडिनी सर्दियों में ही गरम होती है तथा गर्भ धारण करने की क्षमता रखती है।
3. मादा में डिम्ब का स्खलन नर से मिलाने के लगभग 36 घण्टे बाद होता है।
4. साधारणतया 2 वर्ष के अन्तराल से एक सांडिनी से एक बच्चा प्राप्त होता है किन्तु यदि सांडिनी को सर्दी प्रारम्भ होते ही गर्भित कर अगले वर्ष दिसम्बर में बच्चा लेकर दो माह पश्चात पुनः गर्भित कराया जाये तो 3 वर्षो में 2 बच्चे प्राप्त किये जा सकते हैं।
5. सांडिनी में गर्भकाल 385 से 390 दिन के बीच पाया जाता है।
6. प्रसव के समय देखा गया है कि सांडिनी में दूध उतर जाता है, प्रजनन अंग शिथिल पड़ जाते हैं तथा प्रजनन अंगों से श्वेत द्रव निकलने लगता हैं। पशु बार–बार बैठता व खड़ा होता है। बच्चे को मां का पहला दूध (खींस) एक घण्टे के भीतर पिलाना आवश्यक है।
7. सांड की जेर का ध्यान रखना चाहिए कि वह 12 घण्टे के अन्दर निकल जाये, नहीं निकलने की स्थिति में पशु चिकित्सक को दिखावें।
8. बच्चे की नाभि में जीवाणु रोधक औषधि लगवानी चाहिये। हो सके तो विटामिन ''ए'' का टीका लगवा देना चाहिये । तीन दिन तक ''क्लोरमकोनिकल'' या कोई प्रतिजीवि औषधि दिलाने से बच्चों में मृत्यु दर को कम किया जा सकता है।

ऊँटों की आवास व्यवस्था

1. ऊँटों का आवास खुली जगह में होना चाहिये। धूप और बारिश से बचाने के लिये थोड़ी छाया का भी प्रबन्ध करना चाहिये ।
2. ऊँट के आवास स्थल ऊँचाई पर होने चाहिये जहां पर वर्षा का पानी न रूक सके ।
3. आवास की दीवारें मिट्टी या कच्ची ईंटों की बनाई जा सकती है।
4. खुला हुआ भाग ऐसा न हो जहाँ सीधी हवा आती हो ।
5. फर्श कच्चा भी रखा जा सकता है लेकिन ऐसा बनाना चाहिए जहाँ गन्दगी जमा न हो सके।
6. बाड़े में एक नांद भी बनानी चाहिये। यह पक्की ईंटों की तथा जमीन से 3 फुट की ऊँचाई पर होनी चाहिए। गर्मियों में ऊँट को खुले में रखना चाहिए।
7. एक ऊँट को 70–100 वर्ग फुट स्थान की आवश्यकता होती है।

ऊँटों की सामान्य बीमारियाँ– ऊँट में होने वाली बीमारियां, दस्त लगना, आफरा, पैरों की खुजली, परजीवी प्रकोप, सर्रा अथवा तिबसा (ट्रिपेनोसोनियसिल), एन्थ्रेक्स, गलघोटू, निमोनिया, माता आदि रोग आते हैं।

महत्वपूर्ण बिन्दु (Important Points)

1. तीवर्षा रोग ट्रिपेनोसोमा इवैन्साई नामक परजीवी कीटाणु द्वारा होता है।
2. राष्ट्रीय पशु अनुवांशिक संसाधन ब्यूरो, करनाल (हरियाणा) के अनुसार भारतीय गाय की 40 तथा भैंस की 13 मान्य नस्लें है।
3. भैंसो में सबसे अधिक वसा प्रतिशत (12–14 प्रतिशत) भदावरी नस्ल की भैंस के दूध में पाया जाता है।
4. विश्व में बकरियों की लगभग 60 नस्ले हैं। जिनमें से लगभग 26 नस्लें भारत में पाई जाती हैं।
5. पिछली टांगों पर पीछे की तरफ लम्बे घने बालो का होना जमुनापारी नस्ल की खास पहचान है।
6. बरबरी नस्ल की बकरी 12–15 माह की अवधि में दो बार ब्यांती है तथा एक बार में अक्सर दो बच्चे देती है।
7. टोगनबर्ग दुधारू नस्ल की बकरी है।
8. टोगनबर्ग नस्ल की बकरी के सींग नहीं होते हैं।
9. भारत में भेड़ों की लगभग 42 नस्लें है ।
10. मारवाड़ी नस्ल की भेड़ें मुख्यतः मारवाड़ क्षेत्र के पाली, जोधपुर, नागौर, सिरोही जिलों में पायी जाती हैं।

11. भेड़ की चौकला नस्ल को ''राजस्थान की मेरिनो'' कहा जाता है।

12. अविवस्त्र नस्ल की भेड़, को रेम्बूले नस्ल के मेरिनों मेढ़ों तथा राजस्थान की चौकला नस्ल की भेड़ के संकरण से विकसित किया गया है तथा अविकालीन नस्ल की भेड़ें रेम्बूले नस्ल के मेरीनों मेढ़ों (नर) तथा मालपुरा नस्ल की भेड़ों (मादा) के संकरण से विकसित की गई हैं।

13. मेरिनों नस्ल की भेड़ों की गर्दन तथा कंधों की त्वचा पर झुर्रियाँ होती हैं।

14. भारत में सर्वाधिक ऊँटों की संख्या राजस्थान में है।

15. बीकानेरी ऊँट की जमीन से थुई तक ऊँचाई 10 से 12 फीट होती है।

16. जैसलमेरी नस्ल के ऊँट का उद्गम स्थान राजस्थान का जैसलमेर क्षेत्र है।

17. ऊँट के कूबड़ का आकार उसको मिल रहे आहार की मात्रा दर्शाता है ।

18. ऊँट को प्रतिदिन औसतन 75–150 ग्राम साधारण नमक दिया जाता है।

19. ऊँट को रोजाना 18–36 लीटर पानी की आवश्यकता होती है।

20. सर्रा रोग तीन वर्ष तक चलता रहता है इसलिये इसे तीवर्षा रोग कहते हैं।

अभ्यासार्थ प्रश्न

बहुचयनात्मक प्रश्न –

1. गाय की दुधारू नस्ल है –
(अ) नागौरी (ब)खिल्लारी
(स)गिर (द) हरियाणा

2. मिनिएचर गाय कहलाती है
(अ) बच्चौर (ब)खिल्लारी
(स)कंगायम (द)बेचूर

3. राजस्थान में पायी जाने वाली सबसे अच्छी भारवाही नस्ल है
(अ) नागौरी (ब)राठी
(स)हरियाणा (द) थारपारकर

4. सबसे अधिक वसा प्रतिशत वाले दूध के लिये भैंस की नस्ल जानी जाती है।
(अ) मुर्रा (ब) भदावरी
(स) जाफराबादी (द) सूरती

5. बकरी की टोगनवर्ग नस्ल को पालते है।
(अ) दूध के लिये (ब) मांस के लिये
(स) पश्मीना के लिये (द) मोहेर के लिये

6. जमुनापारी नस्ल की बकरी का मूल उत्पत्ति स्थान है –
(अ) एटा जिला (ब) इटावा जिला
(स) आगरा जिला (द) मैनपुरी जिला

7. राजस्थान की मेरिनों, भेड़ की किस नस्ल को कहते है?
(अ) चौकला (ब) मारवाड़ी
(स) अविवस्त्र (द) मालपुरा

8. भारत में भेड़ों की लगभग कितनी नस्लें हैं ?
(अ) लगभग 100 (ब) लगभग 150
(स) लगभग 42 (द) लगभग 80

9. बीकानेरी नस्ल के ऊँट की जमीन से थुई तक ऊँँचाई होती है ?
(अ) 12 से 14 फीट (ब)10 से 12 फीट
(स) 7 से 9 फीट (द) उपर्युक्त में से कोई नहीं

10. ऊँट की बीकानेरी नस्ल का उद्गम स्थान है ?
(अ)बीकानेर क्षेत्र (ब)जैसलमेर क्षेत्र
(स)उदयपुर क्षेत्र (द)गुजरात का कच्छ क्षेत्र

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

11. गिर गाय का मूल उत्पत्ति स्थान बताइये।
12. सबसे अधिक दूध देने वाली गाय की विदेशी नस्ल का नाम बताइये।
13. भैंस की नीली नस्ल का नाम नीली क्यों रखा गया है।
14. बीटल नस्ल की बकरी का उत्पत्ति स्थान लिखिए।
15. किस नस्ल के बकरो (नर) में दाढ़ी पाई जाती है ?
16. पेल्ट के लिये भेड़ की उपयुक्त नस्ल का नाम लिखिए।
17. उत्तरी हिमालय क्षेत्र में पाई जाने वाली भेड़ की किन्हीं दो नस्लों के नाम लिखिए।
18. पशुगणना 2012 के अनुसार राजस्थान में ऊँटों की संख्या कितनी है ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

19. जाफराबादी भैंस की शारीरिक विशेषतायें लिखिये ।
20. नस्ल किसे कहते है ?परिभाषित कीजिए ।
21. टोगनबर्ग नस्ल की बकरी की विशेषताएँ लिखिए ।
22. बीटल नस्ल की बकरी की क्या उपयोगिता है ?
23. केन्द्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान अविका नगर, टोंक पर संकरण द्वारा विकसित दो नस्लों के बारे में बताइये।
24. जैसलमेरी नस्ल की भेड़ का उत्पत्ति स्थान एवं वितरण लिखिए ।

25. कराकुल नस्ल की भेड़ का उत्पत्ति स्थान एवं शारीरिक विशेषतायें लिखिए ।
26. अविकालीन नस्ल की भेड़ का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।
27. ऊँट की बीकानेरी नस्ल का वर्णन कीजिए।

निबन्धात्मक प्रश्न –

28. गाय की निम्न नस्लों का उत्पत्ति स्थान, लक्षण एवं उपयोगिता तालिका बनाकर लिखिये ।
    (अ) थारपारकर (ब) जर्सी
    (स)मालवी (द) हरियाणा
29. भैंस की मुर्रा एवं मेहसाना नस्लों का वर्णन कीजिए ।
30. बरबरी नस्ल का मूल स्थान, वितरण, विशेषतायें तथा उपयोगितायें लिखिए ।
31. मेरिनो नस्ल की भेड़ का उत्पत्ति स्थान, वितरण, विशेषतायें एवं उपयोगितायें लिखिए ।
32. भेड़ की मारवाड़ी नस्ल का उत्पत्ति स्थान वितरण, शारीरिक विशेषतायें एवं उपयोगितायें बताइए ।
33. ऊँट की निम्न नस्लों का उत्पत्ति स्थान, लक्षण एवं उपयोगिता तालिका बनाकर लिखिये ।
    अ. बीकानेरी ब. मेवाड़ी
    स. जैसलमेरी

उत्तरमाला

स 2. द 3. अ 4. ब 5. अ 6. ब 7. अ 8. स 9. ब 10. अ